जनवरी 2018 वर्ष : 1 अंक : 4

सिफरी मासिक समाचार

मात्स्यिकी के गौरवशाली 70 वर्ष

निदेशक की कलम से

सभी सहकर्मियों एवं पाठको को नव वर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाये। यह वर्ष आपके लिए सुखद, मंगलमय एवं स्वास्थ्यवर्धक हो। पिछले वर्ष संस्थान की अनुसन्धान एवं प्रसार गतिविधिओ का प्रदर्शन सराहनीय रहा। पिछले वर्ष संस्थान ने राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन रेन्गालुंदु, ओडिशा में मार्च महीने में किया। जून महीने में आल इंडिया जूलॉजी कांग्रेस का आयोजन बैरकपुर में किया गया। मई मॉस में भारत सरकार की केन्द्रीय मंत्री सुश्री उमा भारती जी का संस्थान में आगमन हुआ। अक्टूबर महीने में भारत सरकार के माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री जी ने मोतिहारी में सिफरी द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में भाग लिया एवं प्रशिक्षणार्थियो को प्रमाण पत्र वितरित किया। गतवर्ष संस्थान के कई वैज्ञानिको ने अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के लिए विदेश भ्रमण किया। दिसम्बर एवं जनवरी महीने की संस्थान की गतिविधियां इस अंक में सम्मिलित है। झारखण्ड के जलाशयों में इ डास पद्धति का प्रदर्शन किया गया एवं मत्स्य उत्पादन को मोबाइल के द्वारा रिकॉर्ड किया गया। संस्थान ने हैदराबाद में तेलंगाना सरकार के साथ केज कल्चर का दो जलाशयों में प्रक्षेत्र प्रदर्शन के लिए समझौतों पर हस्ताक्षर किये। सरदार सरोवर नर्मदा निगम लिमिटेड के साथ संस्थान ने दो परामर्शी परियोजनाओ के लिए समझौतो पर हस्ताक्षर किये। संस्थान ने मत्स्यजीवियो, मत्स्य पालको के लिए विभिन्न प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

मानसून पश्चात ताप्ती नदी में *मेस्टासेम्बेलग अरमेटस*, *चन्ना पंकटेटस* और *स्पेराटा एओर* प्रजातियों में नेमाटोड डिजेनीन नामक परजीवी के संक्रमण को आठ सैम्पलिंग केन्द्रो पर देखा गया।

पश्चिम बंगाल स्थित ईस्ट कोलकाता वेटलैण्ड में शहर के अवशिष्ट जल बहुताय में प्रवाहित होते है लेकिन इससें मछली उत्पादन अधिक होता है। इस वेटलैण्ड की कार्प प्रजाति *गिबेलियन कतला* की जाँच उन्नत तकनीक, मिनरल फिंगरप्रिन्टिंग द्वारा की गयी एवं पाया गया कि इस वेटलैण्ड की मेजर कार्प प्रजाति, भारी धातु एवं विषैले तत्वों जैसे कार्बन मोनोक्साइड, लेड, पारा, निकेल, क्रोमियम, कैडमियम और सिलेनियम आदि से मुक्त है। इसके साथ इन कार्प मछलियों में मानव जीवन के लिये उपयोगी पोशकीय सूक्ष्म तत्वों, कैलिशयम, फास्फोरस, सोडियम, पोटैशियम, मैंगनीशियम, मैंगनीज, कॉपर, आयरन एवं जिंक आदि पाये गये।

दिसम्बर 2017 के दौरान इलाहाबाद में गंगा नदी से 17.07 मेट्रिक टन मछली पकड़ी गयी। इनमे सबसे अधिक विदेशी प्रजातियां (49 प्रतिशत), भारतीय मेजर कार्प (9.24 प्रतिशत), कैटफिश (7 प्रतिशत) तथा अन्य वर्ग (35 प्रतिशत) की मछलियां दर्ज की गई। भारतीय मेजर कार्प प्रजातियां में *सिरहिनस मृगला* (54.95 प्रतिशत), *कतला कतला* (25.38 प्रतिशत), *लेबियो रोहिता* (10.08 प्रतिशत) तथा *लेबियो कलबसु* (9.95 प्रतिशत) देखे गये।

ताप्ती नदी के उपरी और मध्य स्तर के नेपानगर तथा बुरहानपुर में जल के नमूनों में नाइट्रेट (NO_3-N) की बहुत अधिक, क्रमश: 0.358±0.053 पीपीएम तथा 0.415±0.053 पीपीएम मात्रा पायी गई।

श्रृंगवेरपुर में गंगा नदी पर मत्स्य जागरूकता एवं मत्स्य संचयन कार्यक्रम

दिनांक 5 जनवरी, 2017 को श्रृंगवेरपुर, इलाहाबाद में भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और इलाहाबाद आंचलिक केंद्र के द्वारा एनएमसीजी (स्वच्छ गंगा के लिए राष्ट्रीय मिशन) के तहत भारतीय मेजर कार्प की घटती हुई संख्या के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आईएमसी के 7500 उन्नत अंगुलिकाओ को श्रृंगवेरपुर, इलाहाबाद की गंगा नदी में प्रवाहित किया गया। डा. आर. एस. श्रीवास्तव, केन्द्राध्यक्ष ने कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी मेहमानों का स्वागत करते हुए गंगा नदी की खराब पर्यावरण स्थिति और मत्स्य जैव विविधता पर प्रतिकूल असर पड़ने के कारण मछुआरों की आजीविका पर होने वाले प्रभाव के बारे में बताया उन्होंने मछली जैव विविधता के विकास, पुनर्स्थापना और संरक्षण की पारिस्थितिक तंत्र अवधारणा और नदी में मछलियों की उपलब्धताको भी समझाया। उन्होंने उत्तर काशी से फरक्का तक मत्स्य संचयन के लिए भविष्य की योजनाओं की विस्तार में चर्चा की। उन्होंने विभिन्न संगठनों जैसे गंगा विचारम, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मत्स्य पालन विभाग, स्थानीय नेताओं, और एफ.आर.आई, भारतीय जीव विज्ञान सर्वेक्षण और सी.ई. ई. सहित अन्य गैर-सरकारी संगठनों के महत्वपूर्ण अतिथियो का स्वागत किया।

मत्स्य एवं अन्य विभाग के प्रतिनिधियों ने गंगा नदी की बहाली और पुनर्जीवित करने तथा अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा की। इस चर्चा में संस्थान के वैज्ञानिको, 50 से अधिक मछुआरा समुदायों और यू.एन.आई., पी.टी.आई., ए.एन.आई समेत छः समाचार पत्रों ने कार्यक्रम में भाग लिया। डॉ. डी. एन. झा ने मीडिया, अतिथियों और स्थानीय मछुआरों को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि आशा है कि मछुआरों अब प्रजनन के मौसम में ब्रूडर स्टॉक और किशोर मछलियों को नदी से नहीं पकड़ेगे।

कृषि शिक्षा दिवस

दिनांक 3 से 5 दिसम्बर 2017 के दौरान संस्थान में कृषि शिक्षा दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाकृअनुप- केंद्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान के पूर्व निदेशक एवं विख्यात शिक्षाविद डा. एच. एस. सेन ने किया। उन्होंने बताया कि कृषि विकास में कृषि शिक्षा, अनुसंधान एवं विस्तार का योगदान बढ़ाने के लिए भारत सरकार द्वारा दो वर्ष पूर्व भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं प्रथम कृषि मंत्री श्री राजेंद्र प्रसाद जी के जन्म दिवस को कृषि शिक्षा दिवस घोषित किया गया। कृषि शिक्षा दिवस के कार्यक्रम में ए. पी. सी. महाविद्यालय, एवं मात्स्यिकी महाविद्यालय, रत्नागिरी के मात्स्यिकी स्नातको ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने अपने संबोधन में भारत के वर्तमान परिदृश्य में कृषि शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने छात्रों के साथ बातचीत की और उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

विश्व मृदा दिवस

5 दिसंबर, 2017 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने किसानों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए और जीवन में मिट्टी के महत्व को बताने के लिए 'विश्व मृदा दिवस' मनाया।

प्रतिष्ठित मृदा वैज्ञानिक एवं भाकृअनुप-केंद्रीय पटसन एवं समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान के पूर्व निदेशक डा. एच. एस. सेन ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में भाग लिया।

पूरे विश्व में इस वर्ष "कैरिंग फॉर द प्लेनेट स्टार्ट्स द ग्राउंड" थीम के आधार पर विश्व मृदा दिवस को मनाया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एस.के. सामंता के स्वागत भाषण से हुआ। संस्थान के निदेशक डॉ. बसन्त कुमार दास ने मिट्टी के महत्व को देश के विशाल समुदाय के

लिए भोजन और पोषण सुरक्षा के आधार के रूप में दोहराया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. सेन ने स्थायी कृषि उत्पादन के लिए मिट्टी की उर्वरता और मिट्टी के स्वास्थ्य के रखरखाव से संबंधित समस्याओं पर एक प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि मांग और आपूर्ति के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए हमें 2030 तक उत्पादन कम से कम दोगुना करना होगा और ऐसा करते समय हमें मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने में कड़ी मेहनत करनी होगी।

बारासत ब्लॉक के पचास किसानो ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर, मेरा गॉव मेरा गौरव (एमजीएमजी) कार्यक्रम के तहत संस्थान द्वारा अपनाए गए विभिन्न गांवों के किसानों को कुल 25 मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए।

जनजातीय उप योजना के तहत गरदानमारी, बर्दवान, पश्चिम बंगाल में वैज्ञानिक संवाद

दिनांक 6 दिसम्बर, 2017 को गार्डनमरी, बर्दवान, पश्चिम बंगाल में एक किसान वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 130 से अधिक मछुआरों

ने संस्थान के वैज्ञानिकों के साथ बातचीत में भाग लिया। डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने

वैज्ञानिक विधि से मछली पालन के बारे में मछुआरों को संबोधित किया, साथ ही उन्होंने आजीविका में सुधार के लिए सबजी उगाने और एकीकृत खेती करने पर भी जोर दिया। उन्होंने गांव के पर्यावरण और आद्रभूमि के आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने का भी अनुरोध किया। अपने संबोधन में उन्होंने आद्रभूमि मत्स्यपालन से प्राप्त मुनाफे को मत्स्य पालन विकास में निवेश करने के लिए सलाह दी। निदेशक ने इस अवसर पर ड्रैग नेट्स और मछली के खाद्य

सामग्री को गार्डनमारी के दिघी आदिवासी, बर्दवान के आदिवासी मछुआरों को वितरित किया। इस बैठक में पूर्व विधायक श्री बनमाली हज़रा, श्री सुमाता बंदोपाध्याय, पंचायत प्रधान; श्री गुलाम ज़ियाउद्दीन, एसएमएस, केवीके, बर्दवान और संस्थान के वैज्ञानिक भी शामिल हुए।

मछली कैच डेटा संग्रह के लिए इलेक्ट्रॉनिक डेटा अधिग्रहण प्रणाली (ई-डास) का प्रदर्शन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम अधिग्रहण प्रणाली (ई-डास) विकसित की है जिससे कि जलाशयों (मोबाइल फोन से एसएमएस के माध्यम से) में मछली पकड़ने के

डेटा को सीधे कंप्यूटर सिस्टम में उप्लब्ध डेटाबेस में संगृहीत किया जा सके| इस प्रणाली का दक्षिण भारत के चयनित जलाशयों में पहले ही सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया जा चुका है।

संस्थान ने 6 दिसम्बर 2017 को पत्रातु बांध, रामगढ़, झारखंड में जलाशयों से मछली के कैच डेटा संग्रह के लिए इलेक्ट्रॉनिक डेटा अधिग्रहण प्रणाली (ई -डास) का प्रदर्शन के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में लगभग 25

मछुआरों, राज्य मत्स्यपालन अधिकारियों, डॉ रजनी गुप्ता और श्री दंजित कुमार, एफईओ, रामगढ़ ने भाग लिया। आवेदन प्रमुख मछली पकड़ने वाले चार गांवों के प्रमुख मछुआरों के मोबाइल फोन में ई-डास सॉफ्टवेयर को संस्थापित किया गया। और ई-डास के माध्यम से मछली पकड़ने की रिकॉर्डिंग और संचरण पर प्रशिक्षित किया गया।

जलाशयों में पिंजरे पालन के लिए तेलंगाना सरकार के साथ समझौते का ज्ञापन

संस्थान के एक दल जिसके सदस्य डॉ. बसन्त कुमार दास, निदेशक और डॉ. यू.के. सरकार, विभागाध्यक्ष, जलाशय एवं आद्रछेत्र मात्स्यिकी ने वरिष्ठ राज्य मत्स्य अधिकारियों (उप निदेशक, डॉ. वी. श्रीनिवास और डॉ. एम. कृष्णा) के साथ सिंगुर जलाशय (मेदक जिला, गोदावरी नदी बेसिन),

कोइलेसागर जलाशय (महबूबनगर जिला, कृष्णा नदी बेसिन) और लोअर मैनेर बांध (करीमनगर जिला, गोदावरी नदी बेसिन) तीन जलाशयों का दौरा 19 से 21 दिसंबर 2017 के दौरान किया। यह दौरा तेलंगाना राज्य में पिंजरे की स्थापना के लिय स्थान चयन के तौर पर किया गया। इन जलाशयों से

संबंधित मत्स्यपालन हितधारकों के साथ से बातचीत की गई और जलाशयों में पिंजरे पालन के लाभ और सिद्धांतों के बारे में मछुआरों को अवगत कराया गया। तदनुसार, भाकृअनुप- केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के निदेशक और डॉ. सी. सुवर्ण,

मत्स्यपालन आयुक्त, तेलंगाना सरकार द्वारा दो साल के समझौता ज्ञापन पर डॉ. एम.वी.गुप्ता, विश्व खाद्य पुरस्कार विजेता और वर्तमान में मत्स्यिकी विभाग के

सलाहकार, की उपस्थिति में हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर डॉ. यू. के. सरकार, विभागाध्यक्ष, जलाशय एवं आद्रक्षेत्र मात्स्यिकी, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और डी.डी.एफ. तेलंगाना सरकार भी उपस्थित थे।

समझौता ज्ञापन के अनुसार भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान सभी प्रकार की तकनीकी जानकारियां, सीआईएफआरआई मॉडल पिंजरों की तैनाती और पिंजरे पालन के लिए विविध उच्च मूल्य कि मत्स्य प्रजातियों के लिए सलाह प्रदान करेगा। तेलंगाना राज्य मात्स्यिकी विभाग, रसद और व्यय का ख्याल रखेगा। दोनों जलाशयों में इस परियोजना की निगरानी के लिए दोनों पक्षों द्वारा संयुक्त रूप से की जाएगी।

सुन्दर वन के बक्खाली और फ्रेजरगंज में शुष्क मछली उत्पादन

संस्थान ने फ्रेजरगंज, बक्खाली और पश्चिम बंगाल सुंदरबन के आस-पास के इलाकों में शुष्क मछली उत्पादन के उभरते क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज की है, यहाँ के विशाल मछुआरे समुदाय का जीवन और आजीविका पूरी तरह से उत्पादन प्रणालियों पर निर्भर हैं| शुष्क मछली, हर साल अक्टूबर से मध्य फरवरी तक साढ़े चार महीने के दौरान तैयार की जाती है। सुंदरबन के इस हिस्से में,8 बड़े पैमाने के उत्पादक, फ्रेसेरगंज में 30 छोटे पैमाने के उद्यमियों के समूह, बालीरा में 30 छोटे पैमाने के उद्यमियों के समूह और मध्यम बालीरा साइट के समुद्र किनारे क्षेत्र में 7 बड़े पैमाने के उद्यमियों के समूह, इन शुष्क मछली के उत्पादन में सक्रिय रूप से शामिल है। शुष्क मछली का मुख्य रूप से उत्पादन मानव उपभोग के लिए और भारत के पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में मछली के भोजन के लिए बड़ी मात्रा में किया जाता है।

डॉ बसन्त कुमार दास, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी

अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने मछुआरों की बेहतर आजीविका सुनिश्चित करने के लिए कमजोर लेकिन व्यवसायिक रूप से मजबूत इस क्षेत्र को विकसित करने में गहरी रूचि दिखाई है। उन्होंने विकास सम्बंधी एवं शोध सम्बंधी दोनों प्रमुख मुद्दों को समझाने के लिए वैज्ञानिकों को आह् वान किया।

निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान पश्चिम बंगाल राज्य के नामित इस 'न्यूट्री-स्मार्ट' क्षेत्र में शुष्क मछली उत्पादन प्रणाली में लगे मछुआरों की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए सभी प्रकार के तकनीकी सहायता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। दूसरी ब्लू क्रांति को प्राप्त करने की दिशा में तथा विदेशी राजस्व अर्जित करने के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान शुष्क मछली उत्पादन प्रणाली के सतत विकास के लिए निरंतर 'न्यूट्री-स्मार्ट' क्षेत्र में तकनीकी मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करने के लिए कार्यरत है।

गणतंत्र दिवस का आयोजन

दिनांक 26 जनवरी, 2017 को संस्थान में गणतंत्र दिवस समारोह का

आयोजन बहुत धूम धाम से किया गया। इस अवसर पर पूरे संस्थान को

तिरंगे से सजाया गया। सर्व प्रथम निदेशक महोदय ने राष्ट्रध्वज को सम्मान सहित फहराया। निदेशक ने गणतंत्र दिवस के उद्बोधन में देश के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद किया। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर संस्थान द्वारा गत वर्ष किये गये कार्यो का लेखा जोखा दिया। निदेशक महोदय ने

के वैज्ञानिको. तकनीकी कर्मचारियों प्रशासनिक अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा किये गये कार्यो की भूरी-भूरी प्रशंसा की| निदेशक महोदय ने समस्त कमचारियो, अधिकारियो छात्रो एवं वैज्ञानिको से अपील की, कि सभी लोग मिल कर संस्थान के लिए कार्य करे और संस्थान को और भी उचाइयों पर ले जाये । अंत में आस पास ने गरीब एवं स्कूली बच्चो को मिष्ठान वितरण किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 15 से 21 दिसम्बर, 2017 के दौरान बिहार के बक्सर जिले के 28 मछुआरों के लिये "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया | मछुआरों को अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि भोजन, रोग प्रबंधन, आद्रभूमि मत्स्य पालन आदि पर प्रशिक्षित किया गया।

दिनांक 18 से 19 दिसम्बर 2017 को भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड, गुवाहाटी द्वारा बाढ़कृत आर्द्रभूमि (बील्स) में वैज्ञानिक तरीके से मत्स्य प्रबंधन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिनांक 27 दिसम्बर 2017 को सुन्दरवन के जनजातिय मछुआरों को मत्स्ययन हेतु जाल और मछलियों के लिये आहार का वितरण किया गया। इसमें लगभग 130 जनजातिय मछुआरों ने भाग लिया।

23 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2017 तक बिहार के सीतामढ़ी जिले के 30 मछुआरों के लिये "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसके अन्तर्गत उनको अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

2 जनवरी से 8 जनवरी 2018 तक बिहार के मुंगेर जिले के 30 मछुआरों के लिये "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसके अन्तर्गत उनको अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

संस्थान के वैज्ञानिको ने दिनांक 1 जनवरी से 5 जनवरी 2018 के दौरान भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम, पॉलिसी फॉर साइंस एंड साइंस फॉर पॉलिसी में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 9 जनवरी 2018 को असम के मछुआरों के लिये 47-मोराकोलोग बील, मोरीगांव में संस्थान द्वारा विकसित जलवायु परिवर्तन संबंधी तकनीकों के प्रदर्शन हेतु एक कार्याशला को आयोजित किया।

बिहार के जमुई जिले के 30 मछुआरों के लिये "अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन एवं विकास" के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिनांक 12 जनवरी से 18 जनवरी 2018 तक आयोजित किया गया।

संस्थान ने दिनांक 21 जनवरी 2018 को राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन परियोजना के अंतर्गत पश्चिम बंगाल के नवद्वीप में मात्स्यिकी पुनरूत्थान एवं

मछलियों के संरक्षण हेतु जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें भारतीय मेजर कार्प प्रजातियों के लगभग 50000 मत्स्य बीजो को हुगली नदी में छोड़ा गया।

प्रसार गतिविधियां

संस्थान ने दिनांक 20 दिसम्बर से 29 दिसम्बर 2017 को सुन्दरवन, पश्चिम बंगाल के सुन्दरवन कृषि-ओ-लोकसंस्कृति मेले में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 24 दिसम्बर से 31 दिसम्बर 2017 को नैहाटी, पश्चिम बंगाल के नैहाटी उत्सव-2018 में भाग लिया।

संस्थान ने दिनांक 3 से 5 जनवरी 2018 को पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा आयोजित माटी उत्सव में संस्थान के कार्यकलापों और उपलब्धियों को प्रदर्शित किया।

संस्थान ने दिनांक 7 जनवरी से 14 जनवरी 2018 को बारासात पश्चिम बंगाल के मनमोहन मेला में भाग लिया।

महत्वपूर्ण बैठके

भाकृअनुप - केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और सरदार सरोवर नर्मदा निगम लि0, गुजरात सरकार के बीच 9 जनवरी 2018 को गांधीनगर में बैठक आयोजित हुई जिसमे दो परामर्शी परियोजनाओं, “इम्पैक्ट असेसमेंट ऑफ़

हाइड्रो-इकोलॉजिकल चेंजेस ऑन फिशरीज एंड सोसियो इकॉनमी ऑफ़ फिशर्स डाउन स्ट्रीम ऑफ़ सरदार सरोवर डैम इन नर्मदा बेसिन”, एवं “इन्वेस्टीगेशन ऑन इकोलॉजिकल स्टेटस , कांजेर्वेशन एंड एनहांसमेंट ऑफ़ फिशरीज इन गुजरात् पार्ट ऑफ़ सरदार सरोवर रिजर्वायर ” हेतु एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

संस्थान के निदेशक की अध्यक्षता में वैज्ञानिकों और मात्स्यिकी निदेशालय, उत्तराखंड के बीच दो बैठकें, दिनांक 7 जनवरी 2018 को टेहरी और दिनांक 9 जनवरी 2018 को देहरादून में आयोजित हुई।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान और मात्स्यिकी निदेशक, मत्स्य विभाग, बिहार सरकार के बीच 10 जनवरी 2018 को कोलकाता में बैठक आयोजित हुई।

संस्थान ने 11 जनवरी 2018 को कोलकाता के राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद् में "साइंटिफिक पॉलिसीस फॉर नेक्स्ट जनरेशन साइंटिस्ट " विषय पर आयोजित कार्यशाला में पद्मभूषण, डा0 वी के सारस्वत, सदस्य, नीति आयोग, भारत सरकार के व्याख्यान में भाग लिया।

संस्थान के वैज्ञानिक सदस्य मण्डल ने 18 से 19 जनवरी 2018 को ओडीशा के सालिया बांध प्रक्षेत्र में पिंजरे में मछली पालन हेतु सर्वेक्षण किया।

संस्थान के वैज्ञानिकों ने 22 दिसम्बर 2017 को राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन कार्यालय, नई दिल्ली में नमामि गंगे परियोजना की मध्यावधि पुनरीक्षण बैठक में भाग लिया।

महाराष्ट्र के जलाशयो में पिंजरे में मछली पालन हेतु संस्थान तथा मेसर्स मत्स्यामाई, नागपुर के बीच तकनीक निर्देशो संबंधी समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुआ।

पदोन्नति

डॉ. ए. के. बेरा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पशु चिकित्सा) की पदोन्नति प्रधान वैज्ञानिक पद पर हुई।

श्री नवीन कुमार झा, प्रशासनिक अधिकारी का पदोन्नति पश्चात स्थानान्तरण दिसम्बर माह में भाकृअनुप-राष्ट्रीय पटसन एवं संवर्गी रेशा प्रोद्योगिकी संस्थान, कोलकाता के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के पद पर हुआ।

डा. अजय साहा, वैज्ञानिक (कृषि रसायन) की पदोन्नति ग्रेड पे 6000 से ग्रेड पे 7000 पर हुई।

सम्पादक मंडल की तरफ से

सभी पाठको को नव वर्ष 2018 की हार्दिक शुभकामनाये। यह वर्ष आपके लिए सुखद, मंगलमय एवं स्वास्थ्यवर्धक हो। सिफरि मासिक पत्रिका का चौथा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है । इस अंक में संस्थान के दिसम्बर एवं जनवरी मास के कार्यकलापो का विवरण उपस्थित है। पदोन्नति प्राप्त साथियों को बहुत-बहुत बधाई, आशा है आप सभी को हमारा यह प्रयास अच्छा लगेगा। पत्रिका के बारे में अपनी राय से हमें अवश्य अवगत कराये। आप सभी को गणतंत्र दिवस, मकर संक्रांति एवं सरस्वस्ती पूजा की हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक, संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र

संकलन एवं सम्पादन सहायता: मो. कसिम एवं सुनीता प्रसाद, फोटोग्राफी : सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2008 प्रमाणित संगठन) बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120 भारत दूरभाष: 91-33-25921190/91 फैक्स: 913325920388 ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in